प्रेस विज्ञप्ति

उत्तराखण्ड में रबी मौसम में उगाई जाने वाली फसलों में गेहूँ सर्वाधिक महत्वपूर्ण फसल है। इसकी खेती मैदानी (भांवर एवं तराई) क्षेत्रों से लेकर पहाड़ में लगभग 1500 मीटर की ऊँचाई तक की जाती है।मौसमीय बदलाव के कारण फसलों में रोग एवं कीटों का प्रकोप बढ़ा है। गेहूँ में रतुआ रोग (रस्ट) प्रमुख है जिससे फसल को बचाने के लिये किसान भाई टिल्ट (प्रोपीकानोजोल) नामक दवा का काफी प्रयोग कर रहे हैं। रसायनों के प्रयोग पर धन तो खर्च होता ही है, वातावरण भी दू"ित होता है। अतः उच्च उत्पादकता के साथ–साथ रोग एवं कीटों के प्रति अवरोधी किस्मों का निरन्तर विकास खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भरता बनाये रखने हेतु आवश्यक है।

इसी क्रम में हाल ही में उत्तराखण्ड राज्य विमोचन समिति द्वारा गेहूँ की तीन उन्नतशील किस्मों क्रमशः यू.पी. 2748, यू.पी. 2784 एवं यू.पी. 2785 का उत्तराखण्ड के मैदानी क्षेत्रों (भांवर एवं तराई) में खेती हेतु अनुमोदन किया गया। यू.पी. 2748 प्रजाति को सिंचित दशा में बिलम्ब से बुआई (दिसम्बर माह) के लिए अनुमोदित किया गया है। यह प्रजाति प्रचलित किस्मों पी.बी.डब्ल्यू. 373, यू.पी. 2425 तथा यू.पी. 2565 के तुलना में क्रमशः 20, 18 एवं 6.7 प्रतिशत अधिक उपज दी है। कृ"ि निदेशालय, उत्तराखण्ड द्वारा कृ"ाक प्रक्षेत्रों पर आयोजित परीक्षणों में इसकी औसत पैदावार 44 कु0 प्रति हेक्टेयर पायी गई है। यह प्रजाति रतुआ रोगों के लिए अवरोधी है। दाना सुनहरे रंग का सुडोल है। यह प्रजाति अच्छी गुणवत्ता युक्त ब्रेड एवं रोटी बनाने के लिए उपयुक्त है।

दूसरी प्रजाति यू.पी. 2784 को सिंचित दशा में समय से बुआई (नवम्बर माह) के लिए अनुमोदित किया गया है। कृ"ि निदेशालय, उत्तराखण्ड द्वारा कृ"ाक प्रक्षेत्रों पर आयोजित परीक्षणों में इसकी औसत पैदावार 50.8 कु0 प्रति हेक्टेयर पायी गई है। यह प्रजाति रतुआ रोगों के लिए अवरोधी है। दाना सुनहरे रंग का सुडोल है। यह प्रजाति भी अच्छी रोटी बनाने के लिए उपयुक्त है।

तीसरी प्रजाति यू.पी. 2785 को सिंचित दशा में समय से बुआई (नवम्बर माह) के लिए अनुमोदित किया गया है। कृ"ि निदेशालय, उत्तराखण्ड द्वारा कृ"ाक प्रक्षेत्रों पर आयोजित परीक्षणों में इसकी औसत पैदावार 54.2 कु0 प्रति हेक्टेयर पायी गई है। यह प्रजाति भी रतुआ रोगों के लिए अवरोधी है। इसका दाना काफी बड़ा (1000 दानों का वजन 55 ग्राम), सुनहरे रंग का तथा सुडोल है। यह प्रजाति भी अच्छी रोटी बनाने हेतु वांछित गुणों से युक्त है तथा रोटी बनाने के बाद काफी देर तक रोटी का रंग काला नहीं पड़ता है।